per cent of them are petty traders and businessmen, about 20 per cent of them are labourers, about 12 per cent agriculturists and about 10 per cent are skilled workmen and artisans.

श्री यशपाल सिंह : बर्मा में इन लोगों की लाखों रुपये की सम्पत्ति रह गई है । मैं जानना चाहता हूं कि उनको कम्पेंसेट करने के लिए क्या सरकार ने यह सोचा है कि इन लोगों को यहां पर बसों के परमिट वगैरह दिये जायें या कोटे वगैरह दिये जायें ताकि उनकी वह डेफिशेंसी मेक अप हो सके ?

Shri D. R. Chavan: I have been repeatedly telling the House that the question will have to be addressed to the E.A. Ministry.

श्री गुलशन : क्या महोदय मंत्री बतलाने की कृपा करेंगे कि बर्मा से जो परिवार दिल्ली आ कर बसे हैं उन में शैड्यूल्ड कास्ट के और अनुसूचित जातियों के कितने परिवार हैं ?

Shri D. R. Chavan: There are no classifications made on the basis of castes.

श्री रघुनाथ सिंह : बर्मा से वे हिंदुस्तानी जो सरकारी नौकरियां छोड़ कर वहां से आए हैं, क्या उनको सरकार उसी प्रकार की नौकरियां यहां पर देगी ?

Shri D. R. Chavan: Efforts are made to give employment to these persons both in the Central Government, and the State Governments offices and public sector undertakings. So far in the whole of India about 11,000 persons have got employment.

श्री बड़े : क्या यह सच है कि दिल्ली में जो बर्मा के लोग आए हैं उनके वास्ते कोई भी स्कीम आपके पास नहीं है और जो लोग यहां पर होटलों वगैरह में आ कर ठहरे थे उनको उन होटलों से भी निकाल दिया गया है और इसलिए अब वे आर्य समाज मंदिरों में जा कर ठहर गए हैं ?

श्री कपूर सिंह : गुरुद्वारों में भी ठहरे हैं ।

Shri D. R. Chavan: About driving thes persons from the hotels, I have not got any speicfic inforamtion but to grant relief and rehabilitation to persons coming from Burma there are a number of schemes and these schemes are operating in various states.

श्री रामेश्वरानन्द : मैं बीसियों बार खड़ा हुआ हूं लेकिन आपका अध्यक्ष महोदय इधर दृष्टिपात होता ही नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने देखा है । इस बार तो आप खड़े नहीं हुए हैं ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं बीसियों बार खड़ा हुआ हूं । इधर आपका दृष्टिपात होता ही नहीं है, पता नहीं क्या बात है ।

Petro-Chemical Complex at Koyali

+

*753. **Shri Vishwa Nath Pandey:**
Shri Subodh Hansda:
Shri S. C. Samanta:
Shri M. L. Dwivedi:
Shri Bhagwat Jha Azad:
Shri Ramachandra Ulaka:
Shri Dhuleshwar Meena:
Shri R. Barua:
Shri D. D. Mantri:
Shri Jashvant Mehta:
Shrimati Vimla Devi:
Shri Vasudevan Nair:
Shri Narendra Singh Mahida:
Shri M. B. Vaishya:
Shri D. J. Naik:
Shrimati Johraben Chavda:

Will the Minister of **Petroleum and Chemicals** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 998 on the 6th April, 1966 and state:

(a) whether an agreement for setting up a petro-chemical complex at Koyali has since been reached with a group of three American firms; and

(b) if so, the main features thereof?

The Minister of Petroleum and Chemicals (Shri Alagesan): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

श्री विश्व नाथ पाण्डेय : क्या सरकार ने स्वतंत्र रूप से अन्वेषण कराया है और करा कर यह ज्ञात किया है कि इस स्थान पर प्रचुर मात्रा में साधन उपलब्ध हैं जिस के द्वारा वहां पर पैट्रो रासायनिक उद्योग समूह स्थापित हो सकते हैं? क्या सरकार इनकी स्थापना का विचार कर रही है?

पैट्रोलियम और रसायन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री इकबाल सिंह) : विचार तो है लेकिन इस पैट्रो कैमिकल कम्प्लेक्स को वहां बनाने के लिए नैगोशिएशंज हो रही है। जब वे खत्म हो जाएंगी तब उसके बाद कोई आगे काम चल सकेगा।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय : मेरा प्रश्न यह था कि वहां पर पैट्रो कैमिकल कम्प्लैक्स स्थापित करने के लिए प्रचुर मात्रा में साधन हैं या नहीं हैं, मैटीरियल है या नहीं है?

श्री इकबाल सिंह : साधन तो हैं। नेफथा से बनेगा और नेफथा वहां पर सरपलस है।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय : मैं जानना चाहता हूं कि कब तक अमरीकी कम्पनियां अपना विचार प्रकट कर देंगी ताकि शीघ्र ही पैट्रो कैमिकल्ज की स्थापना की जा सके?

श्री इकबाल सिंह : तीन कम्पनियों के साथ नैगोशिएशंज चल रही हैं। जो ड्राफ्ट-फाइनल एग्रीमेंट है वह मार्च 1966 में उन्होंने दिया है। अभी बात चीत चल रही है। जब खत्म होगी तब उसके बाद पैट्रो कैमिकल्ज बनाई जा सकती हैं।

Shri S. C. Samanta: How much foreign exchange component will be neeessary for this complex and have any attempts been made to manufacture the implements that will be necessary for the complex industries in India?

श्री इकबाल सिंह : दुनिया में यह एक नई इंडस्ट्री है और बड़ी कम्पलिकेटिड भी है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि कितने किस्म के कम्पोनेंट हैं। लकिन इसका जो ज्ञान है वह बहुत कम मुल्कों के पास है।

Shri Jashvant Mehta: Petro-chemical industry is very important for the development of our economy and the Koyali refinery had been over delayed in the negotiations with the foreign co'laborators. What is the hitch in the negotiations and where do matters stand at present and by what time will these negotiations be over? What will be the allocation in the Fourth Plan for the petro-chemical industry in this part of the country?

The Minister of Petroleum and Chemicals (Shri Alagesan): I have a'ready answered that the allocation is Rs. 47 crores for setting up this petro-chemical complex. I am also sorry that negotiations have been taking much too long a time; I hope these will be completed soon. we have made known our views with regard to management and other matters to the parties concerned and after we get their reaction we shall be able to finalise one way or the other.

Shri Jashvant Mehta: What are the reasons for delay?

श्री म० ला० द्विवेदी : कोयली प्राजैक्ट के सम्बन्ध में अमरीकी फर्म्स के अलावा भी किसी और देश से क्या बातचीत का सिलसिला हुआ है यदि हां तो किस देश से और वार्ता का कौन सा दौर चल रहा है?

श्री इकबाल सिंह : पहले कोयली के सम्बन्ध में दो आफर्स आई थीं। पहली आफर आई० सी० आई० और फिलिप्स पैट्रोलियम

की तरफ से आई थी। उन्होंने बाद में उसको विदड्रा कर लिया। अब जो बातचीत चल रही है वह यूनियन का कारबाइड इंटरनैशनल आयल और डऊ कैमीकल्ज के साथ चल रही है। सिर्फ एक ही आफर है।

श्री भगवत झा आजाद : आज देश में पैट्रो रासायनिक उद्योग की जो वर्तमान क्षमता है क्या उसका कोई एसेसमेंट आपने किया है और अगर किया है तो उसके अनुसार आज हमारी आवश्यकपाओं का कौन सा प्रतिशत इन से पूरा हो रहा है? अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आप बार बार जिस नैगोशिएशन का हवाला दे रहे हैं क्या उस में देर होने का कारण कुछ और ही नहीं है और क्या दबाव तो नहीं है जो कि इन कम्पनियों ने आपके ऊपर डाला है? अगर यह सच है तो क्यों नहीं आप बजाय इनके उन देशों से बातचीत करते हैं जिन्होंने हमें अब तक सहायता दी है?

श्री इकबाल सिंह : जहां तक इस बात की जांच का ताल्लुक है, सब से पहले 1961 में काने कमेटी बनाई गई थी, ताकि इस बारे में फ़ैसला किया जा सके कि हिन्दुस्तान में पैट्रो-कैमिकल कम्प्लैक्स किस किस्म का हो और उस को कहां कायम किया जाये। उस के बाद डा० हैनी को फ्रांस से बुलाया गया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट दी कि पैट्रो-कैमिकल कम्प्लैक्स में किस किस्म की चीजें बनाई जानी चाहिए और उस को कहां बनाया जाना चाहिए। उस के बाद मिनिस्ट्री आफ़ इन्डस्ट्रीज एड सप्लाई के वर्किंग ग्रुप और प्लानिंग कमिशन के वर्किंग ग्रुप ने इस बारे में डेफ़िनट किस्म की रीकमेंडेशन्ज कीं। जहां तक इस बात का सवाल है कि हिन्दुस्तान में हमारी जरूरत कहां तक पूरी हो रही है, अभी तक बहुत कम हैं प्राईवेट सैक्टर में दो नैप्था क्रेकर्ज लग रहे हैं। उस के बाद ही पैट्रो-कैमिकल कम्प्लेक्स की बाकी बात शुरू हो सकती है। जहां तक उन मुल्कों का ताल्लुक है, जिन्होंने आज तक हमें मदद दी है, जो भी मल्क इस सिलसिले में हम को मदद देगा, हम उस की मदद लेने के लिए तैयार हैं, बशर्ते कि वह मुनासिब किस्म की मदद हो।

Shri R. Barua: In view of the limited resources, may I know what particular industries in the petro-chemical comp'ex the Government have got in mind especially in Koyali?

Shri Iqbal Singh: In Koyali, the petro-chemical complex will be of a different type; it will include caprolectum, benzene, toulene, banzene ch'oride, polethylane, vinyl chloride, vinyl acetate, PVC and styrene and polystyrene.

Shri Narendra Singh Mahida: May I know the cause of the delay to come to an agreement with the American International Oil Co.? Is it because they are asking for management-control for eight years and is that the cause of the delay and, if so, what is the reaction of the Government?

Shri Alagesan: As I said, we have conveyed our reactions to them not only on management-control but several other matters also. We are awaiting their reactions. These negotiations are willy-nilly delayed. So, it is not possible to clinch these things in one session or two sessions. We are giving our proposals; they are giving their proposals and they go back and come again, and they do not satisfy our requirements. I am sorry these things happen.

Shri S. M. Banerjee: The hon. Minister has mentioned caprolectum. I would like to know whether it is a fact that a licence is being granted for caprolectum to a private sector firm, or is it likely to be given to the Gujarat Fertiliser Corporation. May I know whether a decision has been taken or not?

Shri Alagesan: I just do not remember at what stage it is. I may tell

the hon. Member that the Gujarat Fertiliser Project is likely to get this licence.

Shri D. J. Naik: May I know what is the available quantity of naphtha for this petro-chemical complex, and till the petrochemical complex is set up, what use will be made of the naphtha?

Shri Alagesan: I cannot give the exact quantity, but enough naphtha for consumption in the petrochemical complex is available.

Shri D. J. Naik: Till that petrochemical complex is set up, what use will be made of the naphtha? That is what I wanted to know.

Shri Alagesan: It will be sold to the fertiliser factory and also used as fuel.

Shrimati Renuka Ray: I would like to know what is the principle that guides the Government in pushing up certain new projects for the fifth Plan in respect of the petrochemical complex and in others that are accepted for the fourth Plan. What is the underlying principle for the new projects?

Shri Alagesan: Taking the very instance of petro-chemical industries, we have already licensed several plants in the private sector in Bombay; We have licensed one or two parties to have naphtha crackers and also other petro-chemical units. The Gujarat refinery is already putting up a big plant for petro-chemical complex around it. Naturally, the Haldia plant is coming up; so also in Cochin it is going to come on stream.

"Liquid Fuel from Cambay Oil-Field"

*754. **Shrimati Savitri Nigam:** Will the Minister of **Petroleum and Chemicals** be pleased to state:

(a) whether the experiment regarding the liquid fuel from Cambay oil-field for the use of Industry has been successful;

(b) the arrangements made to use the natural gas for domestic purposes; and

(c) how much natural gas approximately, is being burnt uselessly by the various petroleum and chemical industries in the country?

The Deputy Minister in the Ministry of Petroleum and Chemicals (Shri Iqbal Singh): (a) If by liquid fuel is meant 'condensate', then the matter is under investigation. Efforts are being made to utilise the 'condensate' in Gujarat Refinery near Baroda.

(b) Utilisation of natural gas, so far, is restricted only to industries.

(c) About 1.29 million cubic metres of natural gas is being burnt daily, which is produced along with oil and for which there are no customers.

Shrimati Savitri Nigam: This question has been pending before the Ministry for years. What is the difficulty the Government is facing in channelising this very valuable gas for home fudel purposes?

Shri Iqbal Singh: About the natural gas, that is to be used by certain industries like the Uttaran Power house, the Gujarat Fertilisers Project, Baroda industries and Baroda municipal corporation. In some cases, the lines are not ready. The Gujarat Fertiliser project will go into production in 1967. That is why it is not being used now. Regarding the others, they are utilising some part of it, because the residue fuel is also being given to them Otherwise, that cannot be utilised ir any other place.

Shrimati Savitri Nigam: May I know if any estimate or assessment has been made by the ministry to find out how much kerosene oil, which is being used as home fuel, would be saved if this gas would be channelised to the various cities and urban areas?